REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

आधारशिला नाटक में झलकती भारतीयता

डॉ आशा एस नायर
विभागाध्यक्षा और शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, एन.एस.एस.कॉलेज फॉर विमेन, त्रिवेंद्रम, केरल.

मानव के विकास के साथ-साथ समाज की जटिलताएं बढती रहती हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति तथा सभ्यता का विकास मानव जीवन में बदलाव लाता है और परम्पराओं की लीक से हटकर चलने के लिए उक्साता है। यह मनुष्य को चकाचौंधानेवाली दुनिया की लालच ज़रूर देता है, लेकिन संकटों एवं समस्याओं के जाल में फसाता है, अगर संभलकर कदम न रखे तो। ऎसी परिस्थितियों में स्वरचित उलझनों एवं झंझटों से मुक्ति पाने हेतुआत्मचिंतन के लिए वह विवश हो जाता है।अपने स्वत्व को जीवन में पुनः लाने का सतत प्रयत्न करता है।

भारत के साहित्यकार हो या आम आदमी भारत में जन्म लेने तथा पलने-बढने के नाते, उसके अंतर-सत्ता खोजने का प्रयास उसके द्वारा होता ही रहता है। भारतीयता की प्रासंगिकता वहां है, जहां हम मृगतृष्णा के पीछे भागते हुए थक जाते हैं और अपनापे के आँचल की साया चाहने लगते हैं।अपने हृदय के भीतर झांककर यह देखना अच्छा होता है कि हमारे भीतर कोई गुण या चेतना जीवित है या नहीं।इन चिंगारियों को फिर से भडक सके तो उच्च आदर्श एवं उदात्त विचारों का पुनः सृजन हो सकता है, और वही जीवन की राहों में पथ-प्रदर्शक बन सकता है।

भारत के समाज, संस्कृति, दर्शन एवं सभ्यता की मिलाप से एक नयी चेतना का सृजन होता है, जो साहित्य को हमेशा संबल प्रदान कर देती है। भारतीयता भारत की संस्कृति एवं परम्परा को दर्शानेवाली प्रवृत्ति बनकर भारत के साहित्य में प्रतिफलित होती है।समय और काल के अनुसार भारत को भारतीय बनानेवाला कुछ तत्त्व है जो उसके सभी स्तरों पर, कोटियों पर फैला हुआ है।भारत के साहित्यकार अपने देश को पूरी तरह जानने-पहचानने के लिए बाध्य हैं।भारत की परम्परा के साथ समकालीन परिणामों का समग्र दर्शन भारतीय साहित्य की नींव है।श्रीमती मीनाक्षी मुखर्जी के अनुसार " हमाई पुश्तैनी परम्परा और अभ्यास से प्राप्त पाश्चात्य परम्परा का समन्वय करके ही भारतीय साहित्यकार रचना कर सकता है।" **(१)**

साहित्य की कोई भी विधा भारतीयता से अछूता नहीं है। नाटककार हमीदुल्ला के नाटक "आधारशिला" भारतीयता की महत्ता को दर्शाने का प्रयास करता है। हमीदुल्ला प्रसादोत्तर नाटककारों में प्रमुख हैं। "समय सन्दर्भ", "उलझी आकृतियाँ", "दरिन्दे", "हबार" आदि उनके अन्य प्रमुख नाटक हैं। भारत की संस्कृति एवं परम्परा पर आधारित नाटक है "आधारशिला"।

संस्कृति किसी देश, जाति अथवा मानव के उन आतंरिक गुणों की समष्टि का नाम है जो उसके आचार-विचार. कार्य-कलाप एवं जीवन पद्धतियों में अभिव्यक्त होती है ।मनुष्य भिन्न परिवेशों में पलने के कारण भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक मूल्यों के होते हैं ।उसकी अभिव्यक्ति भावों, विचारों एवं प्रवृत्ति के माध्यम से होती है।

"आधारशिला" नाटक का प्रमुख पात्र है सपना, जो वर्तमान पीढी का प्रतिनिधि है ।वह पाश्चात्य संस्कृति से ज्यादा प्रभावित है। पिता आनंद अपने काम-धंधे में व्यस्त रहता है और बेटी के तौर-तरीके में किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं लगाता है ।उनका मानना है कि "नयी पीढी के अपने प्रश्न हैं और जीवन जीने का अपना तरीका है ।" (२)सपना अपना नौकर राम भरोसे के साथ डांस प्रैक्टिस करती है और दोस्तों के संग पिकनिक जाती है, घूमने जाती है, देर रात तक पार्टियों में भाग लेती है, दूसरों का परवाह नहीं करती है, मॉडल बनना चाहती है ।उसकी बुआ लीलावती को यह सब पसंद नहीं है। सपना बुआ के मुंह से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की बातें सुनना नहीं चाहती। उसका कथन है कि " मैं आकाश में उड़ना चाहती हूँ , ऊंचे .. ऊंचे ..बहुत ऊंचे। मेरे लिए आकाश ही सीमा है ।"(**३**)

सपना का अपना संसार है। बिन माँ की बच्ची होने के कारण लाड-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया है ।घर का वातावरण और सुख-सुविधाएं उसे पाश्चात्य संस्कृति की ओर ले जाती है, जो ढीला है ।सभ्य एवं मॉडर्न बनने के लिए वह ज़्यादा देर घर से बाहर रहती है। दोस्तों के साथ इधर-उधर जाती है, अपनी इच्छानुसार वस्त्र धारण करती है , मॉडलिंग क्लास जाती है ।सभ्यता बाह्य विकास का नाम है और सपना का बाह्य विकास हद से ज़्यादा हुआ है। यह विकास सिगरेट एवं नशीली पदार्थों के सेवन तक पहुँच गया। लीलावती उसे आदर्श भारतीय नारी बनने का उपदेश देती है ।सपना के पिता और उसके भाई आनंद से लीलावती पूछती है कि "शाम गहराने लगे तो पक्षी भी अपने घोसलों की ओर लौट आते हैं। तुम्हारी बेटी देर रात तक घर क्यों लौटती है ?"(**४**)आनंद का मानना है कि वैज्ञानिक युग में युग के साथ मान्यताएं भी बदल जाती है।

सपना के दादाजी अपनी पोती को बिगड़ते हुए देखकर चुप बैठ नहीं सकते थे। वे सपना को बचाने के लिए सपना का मित्र अनिल से मिल लेते हैं ।वे दोनों अपने अपने तरीके से बचाव की कोशिश करते हैं ।दादाजी सपना से कहते हैं कि भारतीय मूल की एक प्रवासी महिला उसे गोद लेना चाहती है जो अरबों की दौलतवाली है और अनेक कारखाने, मिलें, होटल की मालिकिन भी हैं।दादाजी के साथ उसका रिश्ता था, लेकिन उसे तो जीवन भर कुंवारी रहना पडा ।सपना इनकार करती है, क्योंकि उस महिला को तो भारतीय संस्कार एवं परम्परा से युक्त लड़की (सपना) चाहिए, जो वह खुद नहीं है और बनना भी नहीं चाहती ।अनिल उसे नाटक करने का उपदेश देता है, और कॉलेज में खेले गए नाटक की अभिनेयता की ओर उसका ध्यान खींचता है ।दादाजी सपना से कहते हैं कि अगर उसे एतराज़ है तो लीलावती की बेटियाँ बबली या शीतल के बारे में सोचेंगे ।यह उसके लिए एक चुनौती है।

दादाजी सपना की आदतों से दुखी हैं, उसके मॉडलिंग क्लास से परेशान भी ।उनके अनुसार वहां दिखावे की चीज़ें पढाते हैं जो अपसंस्कृति का हिस्सा है ।युवा वर्ग अपनी संस्कृति, सभ्यता और धरती की गंध से कटता जा रहा है। "हमारी युवा पीढी एक अंधी दौड़ में शामिल हो गयी है ।दूसरे देश के ऐसे रीति-रिवाज़, संगीत, रहन-सहन की प्रशंसा या उनकी नकल करना, जो हमारे रीति-रिवाज़, रहन-सहन से मेल नहीं खाते; जो हमारे लिए

अपसंस्कृति है ।"(५) हमारी नैतिकता कुछ कहती है और हम करते कुछ और हैं । नैतिकता जिन मूल्यों का अवगत कराता है उसे पहचानने एवं समझने के लिए विवेकशील होना ज़रूरी है।विवेक हमारे आचार-विचार को सही दिशा देकर हमारे सारे कर्तव्यों का निर्धारण कराता है और सही-गलत का बोध दिलाता है ।जो व्यक्ति आत्म-मनन नहीं करता है, श्रेष्ठमूल्य उसके दिल में पैदा ही नहीं होता ।यही कमी या घोट सपना में है । उसे सही दिशा की ओर ले जाने के लिए उपदेश देने के सिवा कोई कुछ नहीं कर सकता था।

सपना के भीतर दादाजी द्वारा एक चिंगारी फूट निकली थी, उसे बढाने के लिए हवा का झोंका बन जाता है अनिल । एहम मौके पर सपना की मुलाक़ात एक साध्वी से हो जाती है, जो युवावस्था में वैरागिन बनी थी ।वह दुनिया के परिचित पथ से विरक्त होकर अपरिचित मार्ग यानी संन्यास के मार्ग पर निकल पड़ी थी । सपना के लिए अपना घर, घर नहीं, सिर्फ दीवारें हैं । कभी कभी उसे जंगल भी लगती है जहां सारे, कोई खूंखार जानवर हैं, जो एक दूसरे को फाड़ खाने के लिए तय्यार हैं ।सपना के अकेलेपन के बारे में पिता आनंद चिंतित हैं, और आधुनिक वौज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति को दोषी ठहराता है जो एक हद तक सच है ।"इसकी एक वजह संचार माध्यमों द्वारा फैलाया जा रहा ज़हर है ।इसने आदमी को चलता-फिरता मशीनी पुर्जा बना दिया है और इंसानी रिश्तों को उपभोक्ता सामग्री ।"(६)यह आधुनिक जीवन का द्वंद्व है ।सभी किसी न किसी तरीके से इसे भोग रहे हैं ।तेज़ रफ्तार से प्रगती की ओर निकलते वक़्त कई कोमलताएं जीवन से छूट जाती हैं । जीवन में इसकी कमी को छिपाने के लिएमनुष्य कई उपाय ढूँढ निकालते हैं और खुद को मज़बूत कहते फिरते हैं ।दादाजी के राय में "अपने बचाव के लिए हम जो मज़बूत परकोटे गढते हैं, कभी कभी वही परकोटे हमारी अपनी सीमा बन जाते हैं ।"(७)

सपना अपने दोस्तों के साथ जब पिकनिक जाती है, तब साध्वी श्रद्धा भी संग जाती है । खेल-खेल में यह समझाती है कि जिस राह पर वे लोग चल रहे हैं, वह एक चक्रव्यूह की तरह उन्हें फसायेगा, जिससे बच निकलना मुश्किल है । नए-नए चक्रव्यूह और नए-नए नीति-वाक्य उन्हें फ़साने के लिए जाल बिछाकर रखते हैं। उसमें फंस जाने पर नैतिक पतन की ओर घसीटता चला जाएगा । गुलाब की तरह खिलती-महकती जवानी विषैली नागफनी में बदलने के लिए वक़्त भी नहीं लगेगा ।सपना तथा पथ-भ्रष्ट युवा पीढी को सही-गलत की पहचान दिलाने के लिए नाटक के रूप में समझाया जाता है । (यहाँ नाटक के भीतर नाटक होता है)। इसकी वजह से सपना के दिल में हलचल मच जाती है, जिसका परिणाम आशाजनक निकलता है ।

सपना मॉडलिंग क्लास छोड़ देती है और अनिल द्वारा लायी गयी दार्शनिक किताबें पढ लेती है । घर का मेहमान साध्वी और खुद का भोजन स्वयम बना लेती है । माइकल जैक्सन की जगह मीरा और विवेकानंद की तस्वीरें लगाती है। पोप संगीत के बदले भक्ति-गीत सुनती है और पूजा-पाठ करती है ।इस तरह उसके चरित्र का विकास होता रहता है ।वह अपने भविष्य के बारे में चिंतित रहती है । दौलत और ऐशो-आराम के पीछे भागनेवाली भीतर की सपना को चिंतित होना ही है ।उसके भीतर द्वन्द्व चल रहा है ।साध्वी श्रद्धा उसे समझाती है कि केवल उल्लासित रहने से जीवन में परमानंद नहीं प्राप्त होता है ।वे सपना से कहती हैं कि "तुम अपना वर्तमान संवारो । भविष्य अपने आप संवर जाएगा ।"(८)भविष्य पर नज़र लगाकर दौलत एवं सुविधाओं को

इकट्ठा करने में व्यस्त मानव गुज़रे हुए दिनों को भूल जाते हैं, वर्तमान को अनदेखा करते हैं ।हमें अतीत को खोये बिना वर्तमान में जीना है ।तभी भविष्य अपने आप उज्जवल हो जाएगा ।

साध्वी का स्नेह-वचन से सपना अपने आप को संभल लेती है । "स्नेह से स्नेह बढता है । उसके लिए तुम दुसरे का उतना आदर करो जितना चाहते हो वह तुम्हारा करे ।"(**९**) सपना बिलकुल बदल जाती है ।उसे गोद लेने के लिए विदेश से आनेवाली महिला के साथ नहीं जाने का निर्णय खुद लेती है । वह दादाजी से कहती है – "मैंने अपने आप को खोज लिया है दादाजी । मैं सपनी संस्कृति, अपना परिवेश छोडकर नहीं जाऊंगी ।"(**१०**)सपना नकली नाटक करते-करते असलियत में ही भारतीय संस्कृति को जान-पहचान कर लौट आती है । सपना का निर्णय सुनकर लीलावती अपनी बेटियों को गोद देना चाहती है । उसकी नजर धन-दौलत पर है ।लेकिन सबको हैरान कराते हुए दादाजी कहते हैं कि वह महिला जैसी कोई नहीं है जो आये ।लीलावती और आनंद दोनों भाई-बहन उदास एवं हैरान रह जाते हैं ।दरअसल वह दादाजी द्वारा रचा गया एक नाटक था ।सपना को सही राह पर लाने के लिए श्रद्धा नामक साध्वी से मिलकर खेला गया नाटक था ।सपना का दोस्त अनिल भी उसमें साथ दिया था । आखिर वे सारे अपने मकसद में कामयाब होते हैं ।सपना जीवन की सचचाई और यथार्थ को समझ लेती है ।

हमीदुल्ला का नाटक "आधारशिला" भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं अवधारणओं पर आधारित है ।नाटक यह दिखाने का प्रयास करता है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता जीवन का आधार है । यह सच को पूरी दुनिया मानती है, और भरतीय इसपर गर्व करते हैं । लेकिन इसका जीवन में पालन करने से दूर भी रहते हैं । जो जीवन युवा पीढी जीना चाहती है वह अप-संस्कृति का प्रकाश पुंज मात्र है ।आज के मनुष्य का जीवन परिवेश की विसंगतियों में बीता जा रहा है ।वर्तमान सामजिक जीवन विदेशी सभ्यता के प्रदूषण से घिरा हुआ है ।वह हमारे भीतर निहित शक्ति को, बल को, ताकत को अदृश्य रूप से क्षीण कराता रहता है ।आज पुरानी और नयी पीढी का आपसी सम्बन्ध और सौहार्द लुप्त होता जा रहा है ।मानव मशीन की तरह परिणत होकर इंसानीयत से दूर जा रहा है । युवा-पीढी के दिलो-दिमाग में देश के प्रति आदर, प्रेम तथा उसके पर्यावरण के प्रति आकर्षण होना चाहिय ।भूमंडलीकरण के दौर में सांस्कृतिक मूल्यों का बोध मानव को विचलित होने से बचाता है । जो आतंरिक गुणों का समूह संस्कृति में है वह हम में भी है ।संस्कृति हमारे व्यक्तित्व का विधान करती है और विकास भी ।हमें इस बात से अवगत होना ज़रूरी है ताकि हम भारतीय रहे ।

रमेश सी सान्याल ने कहा है "भारतीयता यथार्थ की पहचान है, एक चेतना है ।"(**११**)हमीदुल्ला का नाटक "आधारशिला" इस ओर संकेत करता है ।

सन्दर्भ :

१. पृ सं ६५,ट्वैईस बोर्न फिक्शन - टर्म्स एंड टेक्निक्स ऑफ़ इंडियननोवेल्स इन इंग्लिश, मिनाक्षी मुखर्जी ।
२. पृ सं १२ , आधारशिला, हमीदुल्ला ।
३. पृ सं ९, वही ।
४. पृ सं १२, वही ।

५. पृ सं ३४, वही ।
६. पृ सं ४८, वही ।
७. पृ सं ४९, वही ।
८. पृ सं ७४, वही ।
९. पृ सं ७४, वही ।
१०. पृ सं ७६, वही ।
११. पृ सं १०,इंडियननेस इन मेजर इंडो-इंग्लिश नोवेल्स, समरेश सी सान्याल ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

१. आधारशिला, हमीदुल्ला, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, १९९८ ।
२. हिंदी नाटक- मूल्य चिंतन और रंगदृष्टि, डॉ ओमप्रकाश सारस्वत, शाश्वत प्रकाशन, दिल्ली,१९९७ ।
३. नवम दशक के हिंदी नाटकों की अद्यतन प्रवृत्तियाँ, डॉ सविता तिवारी, अन्नपूर्ण प्रकाशन,कानपुर, २०१२ ।
४. साहित्य और संस्कृति, अमृतलाल नागर, राजपाल एंड संस, दिल्ली, १९८६ ।
५. इंडियननेस इन मेजर इंडो-इंग्लिश नोवेल्स, समरेश सी सान्याल, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, १९८४ ।
६. ट्वैईस बोर्न फिक्शन - टर्म्स एंड टेक्निक्स ऑफ़ इंडियन नोवेल्स इन इंग्लिश, मिनाक्षी मुखर्जी, हीनिमैन पब्लिशर्स, १९७१ ।